रहस्य-रोमांचकारी सरकारी कदम गड़े खजाने की खोज

मनोज कुमार झा

क्या हम मध्य युग में जी रहे हैं? क्या यह इक्कीसवीं सदी नहीं है? एक तरफ़ जहां विज्ञान और तकनीक का विकास अपने पूरे उठान पर है, वहीं शोभित सरकार नाम के एक रहस्यमय साधु के कहने पर सरकार गड़े हज़ारों टन सोने की तलाश में खुदाई करवा रही है। इस सरकार के राज में सोने का बाज़ार भाव लगातार चढ़ता ही गया। जैसे-जैसे सोना चढ़ता गया, रुपया लुढ़कता गया और आम आदमी का जीवन अभावों में डूबता गया।

इधर, साधु को सपने में गड़ा खज़ाना नज़र आया और तंत्र-मंत्र, गंडे-ताबीज पर भरोसा करने वाली सरकार ने साधु के सपने को सच समझ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को गड़े खज़ाने की खुदाई के काम पर लगा दिया। पहला फावड़ा सरकार के प्रतिनिधि उन्नाव जिले के कलेक्टर ने चलाया। देश भर के मीडिया का उस छोटी-सी अनजान जगह पर जमावड़ा लग गया। एक तमाशा ही शुरू हो गया। सोना तो मिला नहीं, पर सरकार ने किला खोद डाला। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस मामले में दखल देने से इनकार कर दिया।

साधु के सपने पर यकीन कर गड़े खज़ाने के लोभ मे किला खुदवाने वाली इस सरकार का चरित्र क्या है, इसे समझ पाना मुश्किल नहीं। स्पष्ट है, सरकार पूरी तरह से मानसिक-वैचारिक दिवालियेपन की शिकार है। इस सरकार में, और ज्यादातर राजनीतिक दलों के जो बड़े-बड़े नेता हैं, उन्होंने कितना सोना दबा रखा है, इसका कोई हिसाब नहीं। देश का धन लूट-लूट कर विदेशों में जमा कर रखा है और वहां भारी संपत्तियां खड़ी कर ली हैं। 'बाबा' और 'योगी' भी इस काम में पीछे नहीं। इन्होंने विदेशी बैंकों में इतना काला धन इकट्ठा कर रखा है कि उसका कोई हिसाब नहीं। लाखों करोड़ों रुपये के न जाने कितने घोटाले किये हैं। इस सरकार ने और भी दूसरी कई सरकारों ने।

इस देश में ऐसे-ऐसे चमत्कारी 'महापुरुष' हुए हैं जो सोने की ईंटों पर नोटों के बंडल बिछा सोते थे, जैसे सत्यश्री साईं बाबा।

ब्रूनेई के सुलतान ने तो अपनी हर चीज़ ही सोने की बना रखी है घर की दीवारों से लेकर कार, प्लेन और कमोड तक। सोना ही सोना।

इस देश के कई मंदिरों में न जाने कितने हज़ार टन सोना पड़ा हुआ है। अरब-खरबपति न जाने कितना सोना बर्बाद कर रहे हैं और सरकार आम जनता से कहती है कि सोना न खरीदे, सोने का मोह त्याग दे, क्योंकि इससे महंगाई बढ़ती है। वहीं, सरकार ने यूपी के डौंडिया खेड़ा में खज़ाना ढूंढ निकालने के लिए किले की खुदाई के काम में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ए एस आई) के साथ-साथ जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया जैसे वैज्ञानिक संगठनों को भी लगा रखा है। इन संगठनों के वैज्ञानिकों का मानना है कि खुदाई से भले ही कुछ निकल जाए, पर जरुरी नहीं कि वह सोना ही हो। धरती को खोदने पर कहीं भी कुछ न कुछ तो

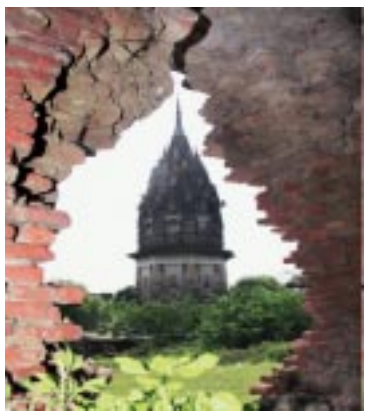

निकलेगा ही, क्योंकि यह धरती हज़ारों वर्षों की संस्कृति का इतिहास अपने अंदर समेटे है।

जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और ए एस आई का काम ख़ज़ाना ढूंढना नहीं है। और वह भी कि एक साधु के सपने में गड़ा ख़ज़ाना आए जिसकी वो तलाश में लग जाएं। यह तो इन वैज्ञानिक संगठनों की प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध है। फिर इन संगठनों को चला रहे बड़े-बड़े वैज्ञानिकों में इतना साहस क्यों नहीं कि वे सरकार को दो टूक बता सकें कि गड़ा ख़ज़ाना ढूंढना एक व्यर्थ का काम है और यह उनका काम नहीं है। उनका काम कहीं व्यापक है। उनका काम अनुसंधान और ज्ञान की खोज है, भू-तात्विक और सामाजिक संस्कृति का संधान उनका उद्देश्य है, न कि गड़े ख़ज़ाने की तलाश करना। स्पष्ट है, अनुसंधान और ज्ञान को बढ़ावा देने वाले संगठनों में भी तर्कबुद्धिवाद से परे, सुविधाभोगी, सरकार का हुकुम बजाने वाले तत्व हावी हैं। ए एस आई को राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद के अस्तित्व की पहचान करने जैसे, सामाजिक-सांस्कृतिक अनुशीलन की दृष्टि से अनावश्यक कार्य में लगाया गया था। जाहिर है, जनता के पैसे से चलने वाले इन वैज्ञानिक संगठनों को सरकार ने अपनी चेरी बना रखा है। यही कारण है कि देश में मूलभूत अनुसंधान कार्य नहीं हो पा रहे और ज्ञान का विकास अवरुद्ध है। सरकार की विचारहीनता सब पर हावी हो रही है।

गड़े सोने की इस खोज को लेकर राजनीतिक हलकों में सरगर्मी छाई है। भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी ने जब सरकार के इस प्रयास का मज़ाक उड़ाया और विदेशों में दबाकर रखे गए काले धन की बात उठाई तो 'स्वप्नजीवी' संत सुशोभित सरकार नाराज हो गए। भाजपा साधु-संतों-महंतों-संन्यासिनों-साध्वियों की पार्टी है। 'जय श्री राम' इसका नारा है। इसी पार्टी की नेत्री एक समय 'सेक्सी संन्यसिन' कही जाने वाली उमा भारती ने 'बलात्कारी' संत आसाराम की तरफदारी की थी और इसी पार्टी से निकाल दिया गया इस देश का एक बड़ा वकील जो कानून मंत्री भी रह चुका है, आसाराम को कानून की गिरफ़्त से बचाने के लिये अदालत में खड़ा हुआ था। ऐसी पार्टी का प्रधामंत्री पद का उम्मीदवार घोषित हो चुका नेता अगर 'संत' के विरुद्ध हो जाए तो कैसे काम चलेगा। इसीलिए, नरेन्द्र मोदी को तुरंत माफ़ी मांगनी पड़ी और अपना प्रतिनिधि सुशोभित सरकार को मनाने के लिए भेजना पड़ा। संत सुशोभित सरकार के समर्थन में बयान जारी करना पड़ा।

इधर जनता दल (यूनाइटेड) के नेता ख़ज़ाने की खोज पर सरकार की खिल्ली उड़ा रहे हैं। नीतीश कुमार ने इसे अंधविश्वास से भरा कदम बताया है। शरद यादव ने तो इस मामले को अदालत में ले जाने की बात कही है। उन्होंने कहा है कि वे केंद्रीय मंत्री चरणदास महंत को महंत बना कर ही छोड़ेंगे। ये चरणदास महंत ही हैं जो इस ख़ज़ाने की खोज की नाटक के मुख्य सूत्रधार बताए जाते हैं। चरणदास महंत सोनिया गांधी के काफ़ी करीब हैं। अपने आपको आधुनिक और रैशनल मानने वाले 'राजपुत्र' राहुल ने गड़े ख़ज़ाने की खोज पर मुंह नहीं खोला है।

कुल मिलाकर, सरकार लोगों को उसी के खर्चे पर तमाशा दिखा रही है, भूखी दुखी जनता को गुमराह कर रही है।

सरकार के इस प्रयास की जितनी भी आलोचना की जाए, कम होगी। सरकार सत्ता और संपत्ति के नशे में गाफ़िल है।

सोने की महिमा न्यारी है। सोने पर कवियों-विद्वानों ने खूब लिखा है। शेक्सपीयर ने लिखा है कि सोना रंक को राजा बना देता है और मूर्ख को विद्वान।

एक भारतीय कवि ने लिखा है-

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
एक खात बौराय नर एक पाय बौराय।

लगता है, साधु को सपने में दिखे गड़े ख़ज़ाने को ढूंढने के लिए धरती को खोद रही सरकार बौरा ही गई है।

तुर्की-ब-तुर्की

राहुल गांधी

''मेरी दादी और मेरे पिता को मार दिया। अब ये (साम्प्रदायिक तत्व) मुझे भी मार सकते हैं।''

हमारा कहना है-

- जिन साम्प्रदायिक/आतंकवादी शक्तियों ने श्रीमती इन्दिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्या की वे किसी हिन्दू-मुस्लिम-सिख कठमुल्ले संस्था की उपज नहीं थीं। दरअसल दोनों प्रकरणों में 'भस्मासुर' की कहानी दोहराई गयी थी। ये भस्मासुर क्रमशः इन्दिरा गांधी एवं राजीव गांधी की अपनी नीतियों की ही उपज थे।
- क्या इन्दिरा गांधी ने ही पंजाब में अकालियों से निपटने के लिये तत्कालीन गृह मन्त्री ज्ञानी जैल सिंह के सहयोग से भिंडरावाले जैसे धार्मिक उन्मादियों को खड़ा नहीं किया था? यह उन्माद जब काबू से बाहर हो गया तो अन्ततः स्वर्ण-मन्दिर पर आक्रमण कर इन्दिरा की फ़ौजों को भिंडरावाले गिरोह का खात्मा करना पड़ा। परिणाम स्वरुप सिखों में पैदा हुई नफ़रत और आक्रोश की आंधी ने इन्दिरा गांधी को उड़ा दिया।
- क्या राजीव गांधी ने एल टी टी ई के प्रभाकरण गिरोह को आधुनिक हथियार और सामरिक तैयारी से लैस नहीं किया? स्वयं को दक्षिण एशिया की महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की नीति पर चलते हुए राजीव गांधी श्रीलंका के जातीय संघर्ष की आग में घी डाल कर श्रीलंका सरकार पर अपना दबदबा बनाये रखना चाहते थे। पर यह आग कुछ ऐसी भड़की कि उसे नियन्त्रित करने के लिये भारतीय शान्ति सेना के नाम पर श्रीलंका भेजे गये हज़ारों भारतीय सैनिक मरवाने पड़े। इसी भस्मासुर ने बाद में राजीव गांधी की जान ली।
- राहुल बाबा, अगर आप भी साम्प्रदायिकता का कोई भस्मासुर बनाने की सोच रहे हैं तो आपकी आशंका कि 'वे मुझे भी मार सकते हैं' निर्मूल नहीं कही जा सकती। अच्छा हो आप अपनी दादी व पिता की गलतियों से सबक लें और भस्मासुर बनाने की न सोचें। साम्प्रदायिक ताकतों के विरुद्ध आपकी ललकार तभी रंग लायेगी जब आपकी सरकार यह सुनिश्चित करे कि एक भी निर्दोष जान साम्प्रदायिक दंगों में नहीं जाने दी जायेगी। और यह भी कि बजाय दंगों पर राजनीति करने के दंगे कराने वालों को कड़ी सज़ायें दिलाना आपकी प्राथमिकता में होंगे।

तुर्की-ब-तुर्की

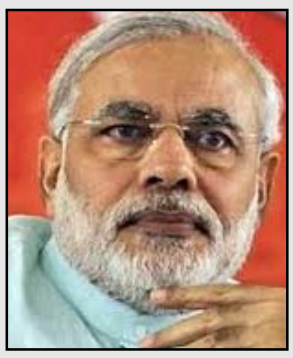

नरेन्द्र मोदी

''मुझे प्रधानमंत्री मत बनाइये। मुझे दिल्ली में चौकीदार बनाइये। मैं वहां देश की तिजोरी पर किसी का पंजा नहीं लगने दूंगा।''

हमारा कहना है-

- मोदी जी आपको याद होगा कि जब सन् 2001 में आपको गुजरात का चौकीदार (मुख्यमंत्री) बनाया गया था तो कुछ ही महीनों में आपने वहां अपनी 'चौकीदारी' का ऐसा नमूना पेश किया कि हज़ारों व्यक्ति साम्प्रदायिक दंगों में मारे गये। सैंकड़ों औरतों के साथ बलात्कार हुआ और लाखों लोग महीनों तक शरणार्थी शिविरों में पड़े रहने को बाध्य हुए। क्या ऐसी ही चौकीदारी आप दिल्ली में भी निभाने की बात कर रहे हैं?
- चौकीदारी तो आप कैसे निभायेंगे इसका आभास इस बात से लगता है कि टाटा, बिड़ला, अम्बानी, जिंदल इत्यादि महाकार्पोरेटों के एक से एक देश की सम्पदा एवं तिजोरी को लूटने के किस्से सामने आ रहे हैं पर आपकी जुबान से उनके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं निकलता। जाहिर है चौकीदारी तो आप इन महाकार्पोरेटों की ही निभायेंगे। ऐसे में जनता का जो होना है वह होगा ही।
- हमें डर है कि आपकी वफ़ादारीभरी चौकीदारी से खुश हो कर भारत एवं विदेशी महाकार्पोरेट मिलकर आपको देश का तानाशाह बना सकते हैं। उनके सहयोग से जनता की ऐसी-तैसी करने का एक ऐसा दौर शुरु हो जायेगा जिसका अन्त करने के लिये इस देश को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।
- गुजरात में आपकी चौकीदारी के चलते वहां अलकायदा जैसे अंतर्राष्ट्रीय आतंकी संगठन घुसपैठ कर सके थे। दिल्ली में चौकीदार बनने के बाद आपकी पुरानी नीतियों के चलते सारे देश के पैमाने पर आतंकी संगठन खड़े हो जायेंगे। फ़िर भारत की दशा भी आज के पाकिस्तान जैसी ही हो जायेगी जहां खून-खराबा रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं।